(IJASSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150 | p-ISSN: 2455-7722

SALIENT FEATURES OF INDIAN SOCIETY IN THE LATE 18TH CENTURY

Dr. Manoj Singh Yadav

Asst Prof, Dept of History, Kashi Naresh Govt PG College, Gyanpur, Bhadohi

18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय समाज की प्रमुख विषेशताएं

डॉ0 मनोज सिंह यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर–इतिहास, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही।

भारतीय इतिहास में 18 वीं षताब्दी एक दुखांतकारी युग के रूप में स्वीकार की जाती है। इस षताब्दी में दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता का विघटन हो गया जिसके फलस्वरूप प्रगतिषील एवं व्यवस्थित षासन की आषा समाप्त हो गई और राजनीतिक तथा सामाजिक विनाष का दौर प्रारम्भ हुआ। भीशण राजनीतिक अषांति, पूर्ण सामाजिक अराजकता एवं विकट आर्थिक दुर्दषा इस षताब्दी की पहचान है। इस षताब्दी का इतिहास वस्तुतः शडयन्त्रों, अपराधों एवं पतन का इतिहास है। भारत का यह अन्धकार युग था।

18 वीं षताब्दी का भारतीय समाज अनेकानेक कुरीतियों का षिकार था। विभिन्न धर्म आपसी विद्वेश, जाति व्यवस्था, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दासता आदि कुरीतियों ने भारतीय समाज को विकृत बना डाला था और लोग अनैतिकता एवं अंधविष्वास का षिकार होकर प्रगति एवं आदर्ष के सोपान से नीचे गिर पड़े थे। 18 वीं षताब्दी के उत्तरार्द्ध के भारतीय समाज को धार्मिक रूढ़ियों एव अंध विष्वासों ने बुरी तरह से जकड़ लिया था। उस समय प्रचलित हिन्दू तथा मुस्लिम दोनो धर्म रूढ़िग्रस्त हो गये थे। इस समय तक सभी धर्म अपना तर्क संगत स्वरूप खो बैठे थे। इस युग में कोई महान धार्मिक, आध्यात्मिक या नैतिक उपदेषक नहीं था जो अज्ञानियों को ज्ञान का मार्ग दिखलाता।

(IJASSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150 | p-ISSN: 2455-7722

18 वीं षताब्दी में धर्म महज धार्मिक क्रियाकलाप का साधन मात्र था इसलिए समाज का धार्मिक दृश्टिकोण लकीर का फकीर बन गया था। हिन्दू धर्म में मूर्तिपूजा एक आवष्यक बुराई के रूप में प्रचलित थी किन्तु धर्म भावना से अनुमोदित लोग इसे बुरा नहीं मानते थे। कहीं–कहीं पर तो धर्म के नाम पर बलि का भी प्रावधान था। इसी प्रकार इस्लाम में भी सहिश्णुता का अभाव हो गया था। इस्लाम अपने आप में सिमट कर रह गया था और अन्य धर्मों से उसका मधुर संबंध न बन सका। भारतीयों की संकीर्ण धार्मिकता ने समाज में ब्राहमणों एवं पंडितो की प्रधानता स्थापित की जिन्होने विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

18 वीं षताब्दी धार्मिक दृश्टिकोण से ही नहीं सामाजिक दृश्टिकोण से भी अंधकार की षताब्दी थी। भारत में जाति प्रथा प्राचीनतम संस्था के रूप में रही। जाति व्यवस्था पदानुक्रमित श्रेणी श्रृंखला आबद्ध थी इसलिए सामाजिक तथा न्यायिक विशमता पर आधारित थी। जाति नियम अत्यन्त कठोर थे तथा सभी जातियों के लोगों का आपस में मिलना–जुलना आदेषित नहीं था। जाति प्रथा हिन्दू धर्म की लौह प्रथा थी। जाति प्रथा का सबसे बड़ा दुश्परिणाम यह था कि भारतीय समाज अनेक अभेद्य वर्गों में बंटकर अपनी एकता व षक्ति को खो चुका था। इसने समस्त सांस्कृतिक एकता को रौंद दिया। विवाह प्रीतिभोज और रोजगार जैसे सभी महत्वूपर्ण सामाजिक मामलों में ये दल एकांतिक और विषिश्ट थे इस कारण जातिभेद बढ़ता गया। जाति–प्रथा सत्तावादी तथा अजनतांत्रिक थी। यह स्थिति राश्ट्रभावना तथा प्रजातांत्रिक राज व्यवस्था के काल को अवरूद्ध करती है।

कुछ चिंतको ने जाति व्यवस्था को आर्थिक लाभ के लिए उचित ठहराया है। उनका तर्क है कि विभिन्न जाति के लोग विभिन्न रोजगार करते हैं उसे दूसरी जाति के लोग नहीं करते हैं। अतः जाति विषेश को इससे लाभ होता है। मोनियर विलियम्स स्वीकार करते हैं कि ''जाँत पाँत प्रणाली व्यक्ति में आत्मोत्सर्ग की भावना जगाने एवं उसे एक संगठन के अन्तर्गत लाने और बुराई को अंकुष में रखने तथा गरीबी को रोकने में सहायक रही हैं।'' जाँति प्रथा ने देष का अहित किया है। बड़े लोगों ने निम्न वर्ग के लोगों का

(IJASSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150 | p-ISSN: 2455-7722

षोशण किया और उस पर अत्याचार किया। जहाँ ब्राहमण तथा कुलीन परिवार के सदस्यों को समाज के लोग श्रेश्ठ मानकर आदर करते थे नहीं निम्न वर्ग के सदस्यों के प्रति समाज घृणा की भावना रखता था तथा उन्हे उचित सम्मान नहीं देता था।

18 वीं षताब्दी का समाज छुआछूत की भावना से ग्रस्त था और घोर सामाजिक विशमता एवं असमानता को प्रकट करता था। 18 वीं षताब्दी में हिन्दू समाज पर तंत्र मंत्र बुरी तरह से होता था। यह मान्यता भी बुरी तरह से हावी थी कि चांडाल एवं अन्य नीच जाति के स्पर्ष से सभी महिलाओं की स्थिति समाज में दयनीय थी। वे जीवन के जन्म से लेकर मृत्यु तक अपमान झेलती थी। अनेक जातियों में लड़कियों का जन्म दुर्भाग्य तथा प्रकोप का सूचक माना जाता था इसलिए अनेक जन्म लेते ही उन्हे मार दिया जाता था। लड़कियों की षिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। उनका बचपन में ही विवाह संस्कार कर दिया जाता था जिसके फलस्वरूप यौवनवस्था की पीढ़ी पर पहुँचते ही वे विधवा हो जाती थी।

भारत के हिन्दू तथा मुस्लिम समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन था यहाँ पर पर्दा प्रथा समाज की सभी मुस्लिमों में प्रचलित थी। पर्दा प्रथा के फलस्वरूप भारतीयों के नारी समाज में जड़ता का समावेष हो गया था। वे सार्वजनिक विद्यालयों में जाकर षिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ थीं। षिक्षा के अभाव में नारियों में अज्ञानता बढ़ रही थी जिसके परिणामस्वरूप प्रगति की गाड़ी का एक पहिया षिथिल था और राश्ट्र निर्माण का स्वप्न अधूरा था। अतः पुर्नजागरण के लिए नारियों को जागृत करना आवष्यक था। 18 वीं षताब्दी के समाज मे सामाजिक कुरीतियों ने अपने फैलादी पंजे में भारतीय नारी जगत को इतनी मजबूती से जकड़ रखा था कि उससे मुक्त होने में सदियाँ लग गई। अधिकांष राजपूत परिवारों में लड़कियों के जन्म लेते ही उन्हे मार दिया जाता था। इस कुप्रथा से 18 वीं सदी का हर वर्ग जकड़ा हुआ था। महाराजा रणजीत सिंह की पुत्रियों को गंगा में बहाना इसका ज्वलंत उदाहरण है।

बाल विवाह की प्रथा भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही चली आ रही थी। बाल विवाह की प्रथा बंगाल एवं विहार में अधिक प्रचलित थी। बाल–विवाह के कारण जनसंख्या

में तीव्र वृद्धि हुई। अल्पायु में संतान उत्पन्न करने के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। अल्पायु में संतान उत्पन्न करने के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य में गिरावट आई। छोटी उम्र में माँ बन जाना, पीले–जर्द बच्चो से घिरे रहना, विधवाओं की संख्या में अतिषय वृद्धि आदि 18 वीं षताब्दी की जीती जागती तस्वीर बन गई थी।

18 वीं षताब्दी की प्रमुख विषेशता देष के विभिन्न भागों में प्रचलित सती प्रथा थी जिसमें पत्नी अपने पति के साथ स्वेच्छा से या बलपूर्वक जला दी जाती थी। ऐसा न करने वालों का सामाजिक वहिश्कार करके उन्हे प्रताड़ित किया जाता था। राजाराम मोहन राय जैसे अनेको समाज सुधारकों द्वारा इसका विरोध किया जाता रहा किन्तु इसे रोकने में सफलता 1829 ई0 में ही मिल सकी।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पश्ट है कि 18 वीं षताब्दी के समाज में वे सभी तत्व विद्यमान थे जो किसी भी समाज को अंधकार के गर्त में ले जाते हैं। ऐसी प्रथाएं विद्यमान थी जिन्होने भारतीय समाज को अंदर से खोखला करके इतना कमजोर बना दिया था कि वह सुधार या परिवर्तन की भाशा को समझ ही नहीं सकता था। इस प्रकार 18 वीं षताब्दी के उत्तरार्द्ध के समाज को अंधकार का युग कहने में कोई अतिषयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रन्थः–

1–मुगलकालीन भारत, आर्षीवाद लाल श्रीवास्तव

2–मध्यकालीन भारत का संक्षिप्त इतिहास, ईष्वरी प्रसाद

3–आधुनिक भारत का इतिहास, जे0पी0 मिश्रा

4–दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वी0 स्मिथ

5–दि षार्ट कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वी0 स्मिथ

6–भारतीय राश्ट्रवाद की सामाजिक पृश्ठभूमि, ए0आर0देसाई

7–दि राइज एण्ड एक्सपेंषन ऑफ ब्रिटिष डोमिनियन इन इण्डिया

8–प्लासी के विभाजन तक, षेखर बंदोपाध्याय

9–काल ऑफ दि मुगल एम्पायर, वाल्यूम II *जदुनाथ सरकार*

10–रूल्स टाइन्समैन एण्ड बाजारः नार्थ इण्डियन सोसायटी इन दि एज ऑफ ब्रिटिष एक्सपेंषन 1770–1870, सी0ए0 बेली

11–दि काल ऑफ मुगल इम्पायर, एच0 जी0 वीन

12–ए स्टडी ऑफ एट्टीन्थ सेंचुरी इण्डिया, जगदीष नारायन सरकार

13–दि क्राइसिस ऑफ एम्पायर इन मुगल नार्थ इण्डिया : अवध एण्ड पंजाब 17–7–1748, मुजफ्फर आलम

REFERENCES

1. Mughalkaleen Bharat, Ashirwaad Lal Srivastava
2. Madhyakaleen Bharat ka Sankshipt Itihaas, Ishwari Prasad
3. Adhunik Bharat ka Itihaas, J.P. Mishra
4. The Oxford History of India, V. Smith
5. The Short Cambridge History of India, V. Smith
6. Bhartiya Rashtavaad ki Samajik Prishthbhoomi, A. R. Desai
7. The Rise and Extension of British Dominion in India
8. Plassey ke Vibhajan tak, Shekhar Bandopadhyay
9. Call of the Mughal Empire, Vol. II, Jadunath Sarkar
10. Rules Tinesmann and Bazaar: North Indian Society in the Age of British Extension 1770-1870, C. A. Bailly
11. The Call of Mughal Empire, H. G. Veen
12. A Study of Eighteenth Century India, Jagdish Narayan Sarkar
13. The Crisis of Empire in Mughal North India: Avadh and Punjab; 17-07-1748, Muzaffar Alam